इकाई 15 अनौपचारिक शिक्षा से संबंधित कार्यक्रमों के लिए लेखन

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य

15.1 प्रस्तावना

15.2 अनौपचारिक शिक्षा

15.2.1 अनौपचारिक शिक्षा की परिभाषा और उद्देश्य

15.2.2 अनौपचारिक शिक्षाः स्वरूप और विशेषताएँ

15.3 अनौपचारिक शिक्षा में टेलीविज़न की भूमिका

15.4 अनौपचारिक शिक्षा की विषयवस्तु और टेलीविज़न लेखन

15.5 अनौपचारिक शिक्षा के लिए टेलीविज़न लेखन के विविध रूप

15.6 अनौपचारिक शिक्षा और टेलीविज़न की सीमाएँ

15.7 सारांश

15.8 अभ्यास के प्रश्न

15.0 उद्देश्य

- इस इकाई के उद्देश्य के अंतर्गत आप अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में टेलीविज़न की भूमिका और उसके सर्जनात्मक उपयोग के बारे में जान सकेंगे/सकेंगी,
- इस इकाई में आप शिक्षा के अर्थ को समझकर इससे परिचित होंगे/होंगी कि अनौपचारिक शिक्षा किस तरह शिक्षा के उद्देश्य की पूर्ति करती है,
- इस इकाई के अध्ययन के द्वारा आप टेलीविज़न के लिए तैयार किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के निर्माण हेतु पटकथा लेखन की विधि और उसके प्रस्तुतीकरण से अवगत हो सकेंगे/सकेंगी,
- अनौपचारिक शिक्षा, औपचारिक या पाठ्यक्रम आधारित शिक्षा से किस तरह अलग है, इसके बारे में आप जान सकेंगे/सकेंगी,
- इस इकाई में अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में दूरदर्शन और टेलीविज़न के निजी चैनलों की बढ़ती भूमिका पर भी प्रकाश डाला गया है जिसके अध्ययन से आप समझ सकेंगे/सकेंगी कि अनौपचारिक शिक्षा के लिए टेलीविज़न के कार्यक्रम बनाते हुए और उसकी पटकथा लिखते हुए एक लेखक के रूप में आपको किन बातों का ध्यान रखना चाहिए,
- इस इकाई का एक उद्देश्य यह भी है कि आपको अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में टेलीविज़न के सर्जनात्मक इस्तेमाल की संभावनाओं से परिचित कराया जाए,

- इस इकाई को पढ़कर आप अनौपचारिक शिक्षा के संदर्भ में टेलीविज़न के महत्त्व और उसकी सीमाओं से भी परिचित होंगे/होंगी।

15.1 प्रस्तावना

स्वतंत्रता के बाद से देश में शिक्षा का तेजी से विस्तार हुआ है लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में देश के सामने जो चुनौतियाँ थीं, उनका सामना करते हुए शिक्षा का तीव्र विस्तार भी काफ़ी कम सिद्ध हुआ है। शिक्षा की मांग लगातार बढ़ रही है और उस अनुपात में शैक्षिक संसाधनों में वृद्धि नहीं हो रही है। इस कारण शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक उपलब्धियों के बावजूद देश के सामने अभी भी गंभीर चुनौतियाँ हैं, जो विकास में बाधक बनकर खड़ी हैं। खासकर देश के दूर–दराज़ के गाँवों और पिछड़े इलाकों तक औपचारिक शिक्षा को अब भी नहीं पहुँचाया जा सका है। यही नहीं अंतरराष्ट्रीय मानकों और विकसित देशों की तुलना में भारत में अब भी प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा संस्थानों की संख्या जनसंख्या के अनुपात में काफ़ी कम हैं। इस कारण निरक्षरता जो मानव विकास के रास्ते में सबसे बड़ा रोड़ा और अभिशाप है, उसे अब तक खत्म नहीं किया जा सका है और देश में लगभग 31 प्रतिशत आबादी अब भी निरक्षर है।

इसके अतिरिक्त शिक्षा के क्षेत्र में भारत की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिस्थितियों से जुड़ी हुई भी कई समस्याएँ हैं। जैसे सामाजिक–आर्थिक कारणों से बहुत से बच्चे जो प्राथमिक स्कूलों में दाखिला लेते हैं, वे पाँचवीं कक्षा पास करते–करते स्कूल छोड़ जाते हैं। इसी तरह समाज के कमज़ोर, पिछड़े और आदिवासी समूहों में आर्थिक कारणों से बच्चे स्कूल नहीं जा पाते और वे बचपन से ही अपने परिवार के लिए मजदूरी करने लगते हैं। भारत में अभी भी कुछ सामाजिक–सांस्कृतिक कारण हैं और रूढ़ियाँ हैं, जिसके कारण बालिकाओं को स्कूल नहीं भेजा जाता या उनकी पढ़ाई बीच में ही छुड़वाकर उनका विवाह कर दिया जाता है।

औपचारिक शिक्षा से वंचित या किसी भी कारणवश उस तक न पहुँच पाने वाले वर्ग के लिए अनौपचारिक शिक्षा ने नए अवसर प्रदान किए हैं। इसके माध्यम से समाज के कमजोर वर्गों, दूर–दराज़ के इलाकों में रहने वाले लोगों और औपचारिक शिक्षा के दायरे से बाहर के लोगों को शिक्षा प्राप्त करने का मौका मिला है। इसके साथ ही उन लोगों को भी अपनी दक्षता और कौशल में वृद्धि का अवसर मिला है जो नौकरी या व्यवसाय या किसी और काम–धंधे में लगे होने के कारण औपचारिक शिक्षा में नहीं जा सकते हैं लेकिन अपनी दक्षता और ज्ञान के स्तर को बढ़ाने के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं ताकि तकनीक में बदलाव और बदलते समय के साथ उपस्थित चुनौतियों का सामना करने के लिए वे स्वयं को तैयार कर सकें। अनौपचारिक शिक्षा ऐसे सभी लोगों के लिए वरदान की तरह है और वह उन्हें शिक्षा यानी ज्ञान, कौशल और दक्षता के नए–नए रूपों, खोजों और व्यवहारों से अवगत कराती रहती है।

यही कारण है कि पिछले कुछ दशकों में भारत में औपचारिक शिक्षा के साथ–साथ अनौपचारिक शिक्षा की भी माँग बढ़ी है और वह धीरे–धीरे प्रौढ़ शिक्षा और साक्षरता अभियान के सीमित दायरे से बाहर ज्ञान के नए–नए क्षेत्रों में प्रवेश कर रही है।

अनौपचारिक शिक्षा के विस्तार में जनसंचार माध्यम विशेषकर टेलीविज़न और रेडियो उल्लेखनीय भूमिका निभा रहे हैं। यूट्यूब और फेसबुक ने भी इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज अनौपचारिक शिक्षा को जनसाधारण तक पहुँचाने में जनसंचार माध्यमों और नए–नए तकनीकों का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है। भारत में शैक्षिक टेलीविज़न का अभी आशा के अनुसार संपूर्ण विकास नहीं हुआ है फिर भी अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में टेलीविज़न के महत्त्व की हम उपेक्षा नहीं कर सकते हैं। यू ट्यूब ने आज जिस तरह लोकप्रियता प्राप्त कर ली है और शिक्षा के क्षेत्र में इसकी उपयोगिता को लोग समझने लगे हैं, इससे टेलीविज़न पर प्रसारित कार्यक्रमों को यू ट्यूब पर देखना आज काफ़ी सुखद हो गया है। आने वाले वर्षों में अनौपचारिक शिक्षा के विस्तार और विकास के साथ शैक्षिक टेलीविज़न की भी मांग बढ़ेगी।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय ने इस दिशा में 'ज्ञान दर्शन' टेलीविज़न चैनल की शुरुआत करके एक महत्त्वपूर्ण पहल की है। इसके अतिरिक्त डिस्कवरी, नेशनल जिऑग्राफिक, हिस्ट्री जैसे टेलीविज़न चैनल भी अपने लोकप्रिय कार्यक्रमों के द्वारा अनौपचारिक शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। इन सभी चैनलों की बढ़ती लोकप्रियता इस बात का प्रमाण है कि टेलीविज़न को केवल मनोरंजन का माध्यम समझना न सिर्फ बड़ी भूल है बल्कि उसमें निहित संभावनाओं का दुरुपयोग भी है। किताबी और कक्षा आधारित शिक्षा से अलग टेलीविज़न के द्वारा भी लोगों तक शिक्षा पहुँचाई जा सकती है और पहुँचाई जानी चाहिए क्योंकि यह आज की मांग भी बन चुकी है।

15.2 अनौपचारिक शिक्षा

15.2.1 अनौपचारिक शिक्षा की परिभाषा और उद्देश्य

अनौपचारिक शिक्षा पर विचार करने से पूर्व हमारे लिए यह जानना आवश्यक है कि शिक्षा आखिर है क्या? इस संबंध में गुरुवर रवीन्द्र नाथ ठाकुर के विचारों पर गौर करना समीचीन होगा। गुरुवर ने शिक्षा शब्द का अर्थ व्यापक अर्थ में लिया है, उन्होंने अपनी पुस्तक 'Personality' में लिखा है– "सर्वोत्तम शिक्षा वही है, जो सम्पूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है।" (The highest Education is that which make's in our life harmony with all existence)

संपूर्ण सृष्टि से सामंजस्य की स्थापना के लिए शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, आध्यात्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास आवश्यक है। हमारे देश में शिक्षा का आदर्श है–'सा विद्या या विमुक्तये'। तात्पर्य यह है कि शिक्षा हमें हर प्रकार की दासता, अंधकार, अविवेक, अज्ञान आदि से मुक्त करती है। गुरुवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शिक्षा संबंधी विचारों का यदि हम विश्लेषण करें तो हम यह देखेंगे कि उन्होंने लाभप्रद ज्ञान के प्रत्येक अंग के प्रयोग करने में, उस अंग के वास्तविक स्वरूप को जानने में और जीवन में जीवन के लिये सच्चे आश्रय का निर्माण करने में ही वास्तविक शिक्षा देखी है।

वास्तव में शिक्षा ही हमें मूल्यों का आदर करना सिखलाती है। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों से केवल डिग्री ले लेना ही शिक्षा का उद्देश्य नहीं है अपितु अपने जीवन में वैज्ञानिक और आध्यात्मिक ज्ञान को अर्जित करना, विवेकपूर्ण निर्णय लेना

और प्रजातांत्रिक मूल्यों को समझना ही शिक्षा का उद्देश्य है। गुरुवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने प्रकृति के उन्मुक्त प्रांगण को शिक्षा के लिए सर्वाधिक उपयुक्त स्थल के रूप में देखा है। उन्होंने व्यक्तित्व के विकास में नैसर्गिकता और पारिस्थितिकी को महत्त्व दिया है। वे कहते हैं–"खुला आकाश, मुक्त पवन, पेड़–पौधे–ये सब चीजें बच्चों की शारीरिक तथा मानसिक सुपरिणति के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।...जब तक बालकों के हृदय में नूतनता है, कुतूहल सजीव है, इंद्रिय शक्ति सतेज है, तब तक उन्हें उन्मुक्त आकाश के नीचे मेघ और सूर्य की क्रीड़ा–भूमि में खेलने दो। इस भूमा के आलिंगन से उन्हें वंचित न रखो। ...अपने बच्चों को विशाल विश्व के बीच विश्व जननी की प्रत्यक्षलीला का स्पर्श अनुभव करने दो..."।(रवीन्द्रनाथ के निबंध, भाग– एक, अनुवादक – विश्वनाथ नरवणे, साहित्य अकादमी, पुनर्मुद्रण–2012)

जन्म से मृत्यु तक की यात्रा में हम निरंतर सीखते रहते हैं और सीखने की इस प्रक्रिया में मनुष्य से लेकर प्रकृति के अन्य सभी अंगों की प्रमुख भागीदारी रहती है जिसकी हम उपेक्षा नहीं कर सकते हैं। इस शिक्षा की पूर्ति औपचारिक शिक्षा के द्वारा नहीं की जा सकती है इसी से अनौपचारिक शिक्षा का काफ़ी महत्त्व है, जिसकी न कोई सीमा है और न जिसके लिए कोई बंधन ही है। इस संदर्भ में प्रसिद्ध शिक्षाविद् जगमोहन सिंह राजपूत के विचार भी गौर करने के लायक हैं। उनका कथन है–"किसी भी देश में शिक्षा प्रणाली और व्यवस्था की जड़ें गहराई तक वहाँ की मिट्टी में समाई होनी चाहिए। आयातीत कर लाई गई व्यवस्था सर्वसाधारण के लिए सफल हो ही नहीं सकती"। (गांधी को समझने का यही समय, किताबघर प्रकाशन, संस्करण– 2019, पृ.100) 'गहराई तक वहाँ की मिट्टी में समाई होने' के पीछे किसी भी देश की सांस्कृतिक विरासत और ज्ञान–परंपरा की निरंतरता है। औपचारिक शिक्षा में "सा विद्या या विमुक्तये" के महत्त्व पर बल नहीं है क्योंकि यह शिक्षा पश्चिमी शिक्षा–पद्धति से आयातीत है लेकिन अनौपचारिक शिक्षा में भारतीय सांस्कृतिक विरासत और ज्ञान परंपरा की आवश्यकता हमेशा बनी रहती है।

स्पष्ट है कि अनौपचारिक शिक्षा, औपचारिक शिक्षा की सीमाओं और बंधनों से बाहर के लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ही अस्तित्व में आई। शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है और मानव जीवन में उसकी ज़रूरत कभी खत्म नहीं होती है। औपचारिक शिक्षा की सीमा यह है कि वह नागरिकों को एक निश्चित उम्र और सीमा में ही दी जाती है। उसका एक निश्चित पाठ्यक्रम होता है और आमतौर पर विभिन्न पाठ्यक्रमों के बीच एक स्पष्ट विभाजन रेखा होती है, जिसके कारण एक पाठ्यक्रम के विद्यार्थी दूसरे पाठ्यक्रम में दाखिला नहीं ले सकते हैं। एक निश्चित समय–सीमा के बाद उस पाठ्यक्रम की पढ़ाई पूरी हो जाती है और विद्यार्थियों को डिग्री मिल जाती है। इस डिग्री के आधार पर उन्हें उपयुक्त काम मिल जाता है और उनकी पढ़ाई खत्म मान ली जाती है लेकिन अनौपचारिक शिक्षा के साथ ऐसी कोई पाबंदी नहीं है। वह किसी भी उम्र में और किसी भी तरह के पाठ्यक्रम या सामान्य अध्ययन के रूप में उपलब्ध होती है। उसे किसी भी तरह का काम करते हुए कोई भी प्राप्त करने में सक्षम हो सकता है और उसका कोई अंत नहीं है। वह घर के कामकाज में व्यस्त गृहिणी के लिए भी उपलब्ध है और दफ़्तरों और कारखानों में काम करने वाले मजदूरों और कर्मचारियों के लिए भी सुलभ है। अनौपचारिक शिक्षा का लाभ बेरोज़गार युवा भी उठा सकते हैं और सीमा पर तैनात सैनिक भी इससे लाभान्वित हो सकते हैं। यह किशोरों के लिए भी सुलभ है तो

बुजुर्गों के लिए भी इसे प्राप्त करने में कोई कठिनाई नहीं है। दरअसल, अनौपचारिक शिक्षा की सीमा काफ़ी बड़ी है और यह संपूर्ण सृष्टि तक फैली है। इसमें पूरा देश ही विद्यालय है और इसके छात्रों को बिना किसी बंधन के शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता है। यह सामान्य नागरिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक के लिए उपलब्ध है। तात्पर्य यह है कि निश्चित पाठ्यक्रमों, उम्र, विद्यालय या विश्वविद्यालय, निश्चित अर्हताओं आदि की सीमाओं और बंधनों से मुक्त अनौपचारिक शिक्षा एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था है, जो औपचारिक शिक्षा व्यवस्था की कमियों और रिक्तताओं की भी पूर्ति करने में सक्षम है।यह शिक्षा व्यवस्था किसी भी समय टेलीविज़न या यू ट्यूब पर टेलीविज़न से प्रसारित कार्यक्रमों आदि को देखते हुए, नानी, दादी, माता–पिता विद्वानों आदि को सुनते हुए लोगों को शिक्षित होने का अवसर प्रदान करती है।

अनौपचारिक शिक्षा का उद्देश्य लोगों को शिक्षा से जोड़े रखना है। उन्हें नई–नई जानकारियों, ज्ञान और कौशल से अवगत कराना है। अनौपचारिक शिक्षा का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण उद्देश्य शिक्षा और काम के बीच तालमेल को बढ़ाना है। अनौपचारिक शिक्षा का पाठ्यक्रम छात्रों की आवश्यकताओं के अनुसार तैयार किया जाता है। स्पष्ट है कि अनौपचारिक शिक्षा का सर्वाधिक जोर रोज़गारपरक पाठ्यक्रमों और नागरिक जीवन से संबंधित सूचनाओं के प्रसार पर होता है। इसका उद्देश्य लोगों के भविष्य को सुरक्षित और समृद्ध बनाना है, लोगों को सर्वांगीण विकास का अवसर देना है, सभी उम्र के लोगों को व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना है, संवैधानिक लक्ष्यों की पूर्ति हेतु प्रयत्न करना है तथा लोगों की जिज्ञासा और उत्सुकता में वृद्धि करना है। अनौपचारिक शिक्षा रोजगार को बढ़ावा देती है और लोगों को उनके ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक और पारंपरिक परिवेश से संपृक्त रखने का प्रयास करती है। यह निश्चित पाठ्यक्रम की सीमाओं, निश्चित स्थानों, समय के बंधनों और नीरस वातावरण से अलग लोगों को ऐसा परिवेश देती है, जिसमें व्यावहारिक ज्ञान का महत्त्व होता है, जीवन की आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाता है और उनमें मूल्यों के विकास पर बल दिया जाता है।

15.2.2 अनौपचारिक शिक्षाः स्वरूप और विशेषताएँ

अनौपचारिक शिक्षा का स्वरूप बहुत व्यापक है। यह स्कूल और कॉलेजों की चारदीवारी तक सीमित नहीं है और न ही पूरी तरह औपचारिक पाठ्यक्रम और शिक्षा पद्धति पर निर्भर है। जहाँ औपचारिक शिक्षा अध्यापक, छात्र, पाठ्यक्रम शिक्षण सामग्री और कक्षाओं के कड़े अनुशासन में चलती है, वहीं अनौपचारिक शिक्षा के साथ ऐसी कोई बाध्यता नहीं है। अनौपचारिक शिक्षा प्रणाली की प्रमुख स्वरूपगत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. अनौपचारिक शिक्षा प्रणाली की शिक्षण पद्धति में काफ़ी लचीलापन होता है और इसमें अकादमिक ज्ञान के बजाए व्यावहारिक शिक्षा पर अधिक जोर दिया जाता है।

2. अनौपचारिक शिक्षा अधिगम की सतत चलने वाली प्रक्रिया होती है और उसमें विद्यार्थियों को शिक्षा पूरी करने के लिए पर्याप्त समय और अवसर मिलता है।

3. अनौपचारिक शिक्षा में आमतौर पर सीटों की कोई तय संख्या नहीं होती है और छात्रों को न्यूनतम योग्यता पूरी करने पर सामूहिक प्रवेश मिल जाता है।

4. अनौपचारिक शिक्षा में स्व–मूल्यांकन पर ज़ोर दिया जाता है और लचीली होने के कारण इससे संसाधनों की बचत होती है।

5. अनौपचारिक शिक्षा में परस्पर चर्चा, स्वयं शिक्षा और अनुभवों के आदान–प्रदान पर ज़ोर दिया जाता है। इस मायने में यह एक जनतांत्रिक शिक्षा प्रणाली है।

6. अनौपचारिक शिक्षा के तहत प्रौढ़ शिक्षा, सतत शिक्षा, साक्षरता अभियान और अन्य कई तरह की शिक्षा प्रणालियाँ भी शामिल हैं।

7. इसमें सहभागिता का महत्त्व है और लोग प्रशिक्षण के द्वारा अपनी पारंपरिक कलाओं और ज्ञान की विरासत को निरंतर आगे बढ़ाने का प्रयास करते हैं, जैसे आपने साड़ी, चादर आदि को बुनते हुए कुछ पुरुषों और महिलाओं को देखा होगा। उन्होंने किसी पाठशाला या विश्वविद्यालय में यह ज्ञान प्राप्त नहीं किया है। उन्होंने इस कला को अपने पुरखों से सीखा है। उसी तरह कुम्हारों की कला, मधुबनी पेंटिंग, जूट के सामान बनाने की दक्षता आदि भी लोग अपने परिवार से ही सीखते हैं। अनौपचारिक शिक्षा पारंपरिक कलाओं को सहेजने की प्रक्रिया और प्रतिबद्धता में भी है।

फिर भी अनौपचारिक शिक्षा देने वाली कई एजेंसियाँ इस समय हमारे देश में कई महत्त्वपूर्ण काम कर रही हैं। इन एजेंसियों को सुविधा की दृष्टि से मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। जैसे–

1. स्थापित शिक्षण संस्थाएँ– इनके अंतर्गत आने वाली संस्थाएँ हैं :
   - पत्राचार पाठ्यक्रम वाली संस्थाएँ
   - मुक्त विश्वविद्यालय
   - व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित संस्थाएँ
2. जनसंचार माध्यम, जिनके द्वारा अनौपचारिक शिक्षा प्रदान की जाती है।जैसे :
   - शैक्षिक टेलीविज़न, टेलीविज़न के अन्य कई चैनल और दूरदर्शन
   - स्थानीय और सामुदायिक रेडियो
   - इंटरनेट, यूट्यूब, फेसबुक, व्हाट्स एप, ट्यूटर आदि।
3. विभिन्न तरह की सरकारी या गैरसरकारी संस्थाएँ, पारंपरिक और महत्त्वपूर्ण कला संबंधी प्रशिक्षण–केंद्र, भारतीय ज्ञान परंपरा आदि। जैसे :
   - पुस्तकालय
   - कल–कारखाने
   - परिवार
   - समाज के बड़े–बुजुर्ग
   - विद्वानों की संगति
   - गाँव–घर आदि।

उपर्युक्त संस्थाओं के द्वारा आयोजित निम्नलिखित कार्यक्रमों के माध्यम से अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में कई प्रकार से लोग लाभान्वित होते हैं। जैसे :

- कृषि विस्तार सेवाएँ
- स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम
- सामुदायिक विकास कार्यक्रम
- उपभोक्ता शिक्षा
- स्त्रियों की समस्याओं से संबंधित कार्यक्रम
- बच्चों की समस्याओं से संबंधित कार्यक्रम
- श्रमिकों की समस्याओं से संबंधित कार्यक्रम
- लघु उद्योगों तथा कुटीर उद्योगों के प्रशिक्षण से संबंधित कार्यक्रम
- सत्संग
- धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन,
- साहित्यिक पुस्तकों का वाचन
- पुश्तैनी कारोबार से संबंधित प्रशिक्षण
- कहानी कहने की परंपरा आदि।

15.3 अनौपचारिक शिक्षा में टेलीविज़न की भूमिका

अनौपचारिक शिक्षा के विस्तार और प्रसार में टेलीविज़न की अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका है। चूँकि अनौपचारिक शिक्षा में शिक्षक और क्लास रूम के बिना शैक्षिक अंतर्वस्तु को विद्यार्थियों तक पहुँचाना होता है इसलिए जनसंचार माध्यमों खासकर टेलीविज़न की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है। टेलीविज़न शिक्षक और क्लास रूम दोनों की ही भूमिका निभाता है। टेलीविज़न के साथ सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह एक तरह से 'वर्चुअल क्लास रूम' बन सकता है, जिसमें दूर–दराज के क्षेत्रों और एक–दूसरे से अलग बैठे लाखों विद्यार्थियों को एक ही समय में किसी भी पाठ से अवगत कराया जा सकता है। आपने दूरदर्शन या टेलीविज़न के निजी चैनलों पर पुस्तक–चर्चा, किसी साहित्यकार के अवदान पर परिचर्चा, समसामयिक विषयों पर विभिन्न विद्वानों द्वारा बात–चीत, स्त्रियों से संबंधित विभिन्न प्रकार की समस्याओं पर विचार–विमर्श आदि अवश्य देखे और सुने होंगे। आपने भीख मांगने वाले गैंग की सच्चाई तथा कन्या भ्रूण हत्या संबंधी अन्वेषकों या डॉक्टरों के साक्षात्कार भी देखे होंगे। आज डॉक्यूमेंट्री, टेली फिल्म, सिनेमा, देश–विदेश संबंधी समाचारों के वृत्तचित्र आदि अनौपचारिक शिक्षा के सशक्त माध्यम हैं। भूमंडलीकरण, निजीकरण और उदारीकरण के कारण सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन, वृद्धों की समस्याओं आदि से संबंधित समाचार, टेलीविज़न धारावाहिक आदि आते रहते हैं। स्त्री–जीवन की विडंबनाओं से संबंधित कई धारावाहिक वर्षों तक चले हैं और आज

भी चल रहे हैं। बच्चों की समस्याओं से संबंधित भी कई तरह के टेली फिल्म, डॉक्यूमेंट्री, धारावाहिक आदि का प्रसारण होता है। कई तरह के कार्टून शो के द्वारा भी बच्चे कुछ सीखते हैं। 'मोगली' जैसे कार्टून शो का जब टेलीविज़न पर प्रसारण हुआ तो मानवेतर प्राणियों के साथ मोगली के संवेदना युक्त व्यवहार ने सबका ध्यान आकर्षित किया। कई डॉक्यूमेंट्री फिल्मों में भी लोगों के मानवेतर प्राणियों के साथ मानवोचित व्यवहार को महत्त्व दिया गया है। टेलीविज़न पर प्रसारित 'कौन बनेगा करोड़पति', 'क्वीज शो' आदि अनौपचारिक शिक्षा के सशक्त माध्यम हैं। वीरांगनाओं, वीर पुरुषों, इतिहास, पौराणिक आख्यानों, सामाजिक यथार्थ आदि पर आधारित टेलीविज़न धारावाहिकों ने न केवल समकालीनता के संबंध में अनौपचारिक शिक्षा से लोगों को जागरूक किया है, बल्कि ऐतिहासिकता, पौराणिक कथाओं आदि की ओर भी लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। कई साहित्यिक कृतियों पर आधारित टेलीविज़न धारावाहिकों ने समाज के हर वर्ग और हर आयु के स्त्री–पुरुषों को लाभान्वित किया है।

भारत में आरंभ से ही आध्यात्मिक चेतना काफ़ी प्रबल रही है। भक्ति, निष्ठा, समर्पण और आस्था से किस तरह मनुष्य ब्रह्म तक पहुँचने में सफल होते हैं, अन्याय, शोषण और अधर्म के मार्ग पर चलने वाले लोगों का किस तरह विनाश होता है, यह ज्ञान लोगों ने कई पौराणिक कथाओं पर आधारित धारावाहिकों को देखकर भी प्राप्त किया है। आपने 'रामायण', 'महाभारत', 'ऊँ नमः शिवाय', 'देवाधिदेव महादेव','शिव महापुराण', 'श्री कृष्णा', 'जय श्री कृष्णा', 'राधा कृष्ण' आदि धारावाहिक अवश्य देखे होंगे। रामानंद सागर द्वारा निर्देशित 'श्री कृष्णा' धारावाहिक गर्ग संहिता, पद्म पुराण, ब्रह्म वैवर्त पुराण, हरिवंश पुराण, महाभारत, भागवत पुराण, मार्कण्डेय पुराण आदि पर आधारित था, जिसकी पटकथा में बड़ौदा के महाराज सयाजी राव विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. विष्णु विराट जी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। 'महाभारत' देखकर लोगों ने यह शिक्षा तो अवश्य प्राप्त कर ली कि दुर्योधन और उसके भाइयों के विनाश के लिए अज्ञानता, अविवेक, शोषण–वृत्तियाँ, अधर्म, अन्याय और लोभ प्रमुख कारण थे। गीता में क्या है, धर्म क्या है,यह ज्ञान लोगों को 'महाभारत' देखकर प्राप्त हुआ। आप जानते हैं कि 'रामायण' और 'महाभारत' ने लोकप्रियता के सारे रेकॉर्ड तोड़ दिए तो इससे मिलने वाली अनौपचारिक शिक्षा की पहुँच कितने लोगों तक हुई होगी, इसका अनुमान आप लगा ही सकते हैं।

टेलीविज़न की एक विशेषता यह भी है कि दृश्य–श्रव्य माध्यम होने के कारण यह अन्य संचार माध्यमों की तुलना में कहीं ज्यादा संप्रेषणीय और प्रभावी माध्यम है। इसके द्वारा विभिन्न मानसिक स्तर के विद्यार्थियों को एक साथ शैक्षिक पाठ के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराना आसान होता है। चूँकि विद्यार्थी टेलीविज़न के पर्दे पर ग्राफिक्स, दृश्यों और जीवंत प्रयोगों के द्वारा ज्ञान अर्जित करता है, वह टेलीविज़न के प्रयोगशाला में कार्यों को क्रियान्वित करते हुए दृश्यों को देखता है वह परंपराओं, इतिहास और संस्कृति को विभिन्न घटनाओं और कार्यों की दृश्यावलियों के रूप में देखकर समझता है इसलिए उसे किसी भी पाठ को समझने में अधिक कठिनाई नहीं होती है। हालाँकि टेलीविज़न में अभी दोतरफा संवाद की गुंजाइश कम है इसलिए विद्यार्थियों को अपनी जिज्ञासाओं और सवालों का तुरंत जवाब नहीं मिलता है लेकिन हाल के वर्षों में संवादोन्मुख वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के द्वारा इस कमी को भी दूर करने की कोशिश हुई है, जिसके सकारात्मक परिणाम दिखाई पड़ रहे हैं।

अनौपचारिक शिक्षा में टेलीविज़न के प्रयोग का एक लाभ यह भी है कि देश के दूर–दराज़ के इलाकों और छोटे शहरों में बैठे विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों के प्रमुख विद्वानों के व्याख्यान सुनने का अवसर मिल जाता है। अगर टेलीविज़न नहीं होता तो ऐसे विद्यार्थियों को इन प्रमुख विद्वानों के व्याख्यानों को सुनने का शायद ही कभी अवसर मिल पाता। इसके अलावा टेलीविज़न के द्वारा नई से नई जानकारियों और तकनीकों को भी आसानी से आम विद्यार्थियों तक पहुँचाया जा सकता है।

आज सूचना क्रांति का दौर है। सूचना तंत्र ने विश्व को एक गाँव में परिवर्तित कर दिया है। आज घर बैठे लोग टेलीविज़न देखकर यह जान लेते हैं कि अमेरिका, लंदन, इटली, यूक्रेन, इजरायल, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में क्या हो रहा है। कहाँ भूकंप आया, उसकी तीव्रता कितनी रही, उससे जान–माल का कितना नुकसान हुआ, कहाँ ज्वालामुखी फटा, उससे कितने लोग कुप्रभावित हुए आदि से संबंधित ज्ञान निरक्षर लोगों को भी घर बैठे प्राप्त हो जाता है। जब हम ज्वालामुखी को फटते हुए देखते हैं, तो उसके बारे में भी भांति–भांति की कल्पना करते हैं और लोगों से इसके बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। उसी तरह बादल फटना क्या होता है, यह हम टेलीविज़न देखकर जान लेते हैं। उसकी विभीषिका देखकर कभी–कभी हमारे भीतर यह प्रश्न भी उठता है कि बादल क्यों फटता है और हम अपने आस–पास के लोगों से या बुजुर्गों से इसके बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं।तात्पर्य यह है कि टेलीविज़न के समाचारों की दृश्यावलियों में भी शिक्षा का अपार भंडार छिपा है। हीरानंद सच्चिदानंद वात्स्यायन अज्ञेय की एक कहानी है 'शिक्षा'। इसमें गुरु अपने शिष्य से कहते हैं– "तो तुमने देख लिया, इतना ही ज्ञान है। इससे अधिक मेरे पास सिखाने को कुछ नहीं है। यह भी मेरे पास नहीं है, सर्वत्र बिखरा हुआ है। मैंने कहा था कि कोई किसी को कुछ सिखाता नहीं है। उन्मेष भीतर से होता है। गुरु निमित्त हो सकता है। किन्तु निमित्त तो कुछ भी हो सकता है।" यह टेलीविज़न द्वारा प्रदत्त अनौपचारिक शिक्षा के संबंध में भी पूर्णतः सत्य है। यह भी सत्य है कि यह उन्मेष मनुष्य की प्रवृत्ति और संस्कारों के अनुरूप होता है।

रेडियो की तुलना में टेलीविज़न की एक विशेषता यह भी है कि टेलीविज़न के द्वारा व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा को अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों तक पहुँचाया जा सकता है। दरअसल, तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा में व्यावहारिक प्रशिक्षण और प्रयोगों पर अधिक ज़ोर होता है और यह रेडियो के द्वारा संभव नहीं है कि विद्यार्थियों को तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा के प्रयोगों से अवगत कराया जाए लेकिन टेलीविज़न पर प्रयोग और व्यावहारिक प्रशिक्षण को दिखाया जा सकता है, जिससे विद्यार्थी को उसे समझने और अंगीकार करने में आसानी होती है।

15.4 अनौपचारिक शिक्षा की विषयवस्तु और टेलीविज़न लेखन

जैसा कि हम चर्चा कर चुके हैं कि अनौपचारिक शिक्षा का दायरा बहुत व्यापक है। अनौपचारिक शिक्षा के दायरे में उच्च शिक्षा से लेकर प्रौढ़ शिक्षा तक और व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा से लेकर सामान्य नागरिक शिक्षा तक सभी तरह

के विषय सम्मिलित हैं। स्पष्ट है कि अनौपचारिक शिक्षा की विषयवस्तु भी उसके स्वरूप के अनुसार काफ़ी व्यापक है लेकिन अनौपचारिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य देश के नागरिकों के जीवनस्तर में सुधार और उनके मानसिक विकास को लगातार उन्नत करना है। इसे ध्यान में रखकर अनौपचारिक शिक्षा की विषयवस्तु को तय किया जाता है।

अनौपचारिक शिक्षा की विषयवस्तु चाहे जो हो लेकिन उसके लिए टेलीविज़न कार्यक्रमों का लेखन करते हुए कुछ बातों का ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है। जैसे–

1. अनौपचारिक शिक्षा के लिए चाहे जिस तरह का टेलीविज़न कार्यक्रम तैयार किया जा रहा हो, उसके लेखक को यह बात गाँठ बाँध लेनी चाहिए कि उसका दर्शक वर्ग एक तरह का नहीं है। उसमें कई तरह की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक भिन्नताएँ हो सकती हैं और इसलिए टेलीविज़न कार्यक्रम के लेखक को कार्यक्रम की रूपरेखा बनाते समय और उसके लिए पटकथा लिखते समय उन भिन्नताओं का ध्यान ज़रूर रखना चाहिए। लेखक को यह देखना चाहिए कि उसके दर्शकों में साम्यता के बिंदु कौन–कौन से हैं और उसी के अनुसार उसे पटकथा की रचना करनी चाहिए। लेखक को अपने दर्शकों के अधिकतम साझा सरोकारों और ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए उससे संबंधित विषय के पाठ से तालमेल बैठाते हुए कार्यक्रम की रचना करनी चाहिए।

2. अनौपचारिक शिक्षा के स्वरूप और प्रकृति को ध्यान में रखते हुए टेलीविज़न लेखक को कार्यक्रम की रूपरेखा और उसकी पटकथा को जहाँ तक संभव हो, अनौपचारिक ही रखना चाहिए। कार्यक्रम को अधिक से अधिक संप्रेषणीय बनाने के लिए उसे संवादोन्मुख बनाना ज़रूरी है।

3. विद्यार्थियों की दैनिक ज़रूरतों और उसके मानसिक स्तर का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। इसके लिए ज़रूरी है कि अनौपचारिक शिक्षा के पाठ को दैनिक जीवन की घटनाओं से जोड़कर प्रस्तुत किया जाए। यह कई शोधों से प्रमाणित हो चुका है कि सैद्धांतिक नियमों को दैनिक जीवन की घटनाओं से जोड़कर प्रस्तुत करने पर वह विद्यार्थियों को आसानी से समझ में आता है।

4. अनौपचारिक शिक्षा के टेलीविज़न कार्यक्रमों की भाषा जहाँ तक संभव हो सके सरल, स्पष्ट और आम बोलचाल की होनी चाहिए । यहाँ तक कि जब कुछ सैद्धान्तिक और अकादमिक शब्दावलियों का प्रयोग किया जाना ज़रूरी हो तो उसे भी सरल और आम बोलचाल की भाषा में स्पष्ट करने की कोशिश करनी चाहिए।

5. अनौपचारिक शिक्षा के कार्यक्रमों की पटकथा लिखते हुए इस बात का भी ध्यान रखना आवश्यक है कि कार्यक्रम का हिस्सा न होते हुए भी उसके दर्शक विद्यार्थियों को यह महसूस न हो कि वे उस कार्यक्रम के भागीदार नहीं हैं। स्पष्ट है कि कार्यक्रम की रूपरेखा ऐसी होनी चाहिए, जिसमें एक तरफ़ा भाषण या व्याख्यान की अपेक्षा बात से बात निकालने और उसे रोचक तरीके से प्रस्तुत करने की कोशिश करनी चाहिए । कार्यक्रम में एकरसता यानी एक ही शॉट को लंबे समय तक नहीं चलाया जाना चाहिए या उसे बोझिल नहीं बनाना चाहिए।

6. कार्यक्रम की संरचना अगर ऐसी हो, जिसमें विद्यार्थियों को समस्यामूलक स्थिति में लाकर उसका सामूहिक विश्लेषण करने और निदान खोजने के लिए प्रेरित किया जा सके या फिर उन्हें किसी प्रयोग या व्यवहार में उतरने के लिए प्रशिक्षित किया जा सके तो विद्यार्थियों को कार्यक्रम के साथ जोड़ने में आसानी होती है। इससे विद्यार्थी कार्यक्रम के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता के बजाए सक्रिय भागीदार में बदल जाते हैं। सक्रिय भागीदारी किसी भी ज्ञान, कौशल और दक्षता को हासिल करने के लिए बहुत ज़रूरी है।

15.5 अनौपचारिक शिक्षा के लिए टेलीविज़न लेखन के विविध रूप

शिक्षा के क्षेत्र में टेलीविज़न कार्यक्रमों के विविध रूपों का इस्तेमाल हो रहा है। हमने टेलीविज़न कार्यक्रमों के विभिन्न रूपों की पिछले अध्याय में विस्तार से चर्चा की है। उसे यहाँ दोहराने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन अनौपचारिक शिक्षा के लिए टेलीविज़न कार्यक्रमों के विविध प्रकारों को ध्यान में रखते हुए एक टेलीविज़न लेखक को अनौपचारिक शिक्षा की ज़रूरतों, उद्देश्यों ओर अपने विषयवस्तु का ध्यान अवश्य ही रखना चाहिए। औपचारिक शिक्षा की तुलना में अनौपचारिक शिक्षा से संबंधित टेलीविज़न कार्यक्रमों के लिए लेखन कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण है। इसका कारण यह है कि जहाँ औपचारिक शिक्षा का एक निर्धारित पाठ्यक्रम और विद्यार्थी वर्ग होता है, वहीं अनौपचारिक शिक्षा में पाठ्यक्रम काफ़ी हद तक ढीला–ढाला और लचीला होता है, साथ ही विद्यार्थियों का समूह भी काफ़ी भिन्नता लिए हुए होता है।

इस दृष्टि से औपचारिक शिक्षा की तुलना में अनौपचारिक शिक्षा के लिए टेलीविज़न लेखन में सृजनात्मकता की भी ज़्यादा गुंजाइश होती है। लेखक को पर्याप्त आज़ादी होती है और वह बंधे – बंधाए ढाँचे की अपेक्षा टेलीविज़न लेखन में नए प्रयोग भी कर सकता है। इस अर्थ में अनौपचारिक शिक्षा के लिए टेलीविज़न लेखन वास्तव में लेखक को रचनात्मक प्रयोग करने की काफ़ी स्वतंत्रता देता है लेकिन इसके लिए ज़रूरी है कि जिस भी विषयवस्तु पर कार्यक्रम तैयार किया जा रहा हो, उस पर पर्याप्त शोध किया गया हो और कार्यक्रम के दर्शकों की ज़रूरतों के बारे में भी उसे अच्छी तरह से पता हो। दरअसल, अच्छे टेलीविज़न लेखन के लिए यह ज़रूरी है कि लेखक को न सिर्फ विषयवस्तु की बारीकियों का ज्ञान हो, बल्कि दर्शकों की नब्ज़ पर भी उसका हाथ होना चाहिए। अंततः किसी भी कार्यक्रम की सफलता और असफलता का निर्णय दर्शक करते हैं इसलिए उन्हें नज़रंदाज करके कोई भी अच्छा कार्यक्रम नहीं बनाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त लेखक के लिए यह भी जानना आवश्यक होता है कि कार्यक्रम किस प्रकार का है और उसके लिए किस प्रकार की सामग्रियों की आवश्यकता है। उसे कार्यक्रम संबंधी तकनीकों का भी ध्यान रहना चाहिए ताकि वह निर्देशक और प्रोड्यूसर के साथ तालमेल बैठाकर चलने में समर्थ हो सके।

15.6 अनौपचारिक शिक्षा और टेलीविज़न की सीमाएँ

अनौपचारिक शिक्षा के लिए भी मानसिक तैयारी आवश्यक होती है। हालांकि यह सच है कि टेलीविज़न के कार्यक्रम के शब्द जब हमारे कानों से होते हुए हमारे मस्तिष्क में पहुँचते हैं और उसके कार्यक्रमों या समाचारों की दृश्यावलियाँ हमारी

आँखों के कैमरे में कैद होकर हमारे हृदय और मस्तिष्क पर अपना प्रभाव जमाने लगती हैं, तब अधिगम की प्रक्रिया भी निरन्तर चलती रहती है और सीखने की क्रिया और उसके लिए प्रतिक्रिया भी लगातार हमसे उसमें संलिप्तता की मांग करती है। फिर भी हम इस सच्चाई से मुँह नहीं मोड़ सकते हैं कि टेलीविज़न द्वारा प्रदत्त अनौपचारिक शिक्षा की भी एक सीमा होती है और उसमें लगातार संलिप्तता नहीं रहने के कारण उसका प्रभाव सभी लोगों पर नहीं पड़ता है। टेलीविज़न समाचार सूचनाएँ देता है तो इसके धारावाहिक और टेलीफिल्म हमें पुराण, इतिहास, भूगोल, संस्कृति, परंपरा, समाज, वैश्वीकरण, युगीन यथार्थ आदि की जानकारी देते हैं लेकिन थका हारा श्रमिक जब दिन भर श्रम के भार से पूरी तरह शिथिल हो जाता है, तब वह मनोरंजन प्रधान सामग्रियों को ही ढूँढ़ता है और टीआरपी की होड़ में आगे रहने के लिए प्रतिबद्ध चैनल जब 'नागिन' जैसे धारावाहिकों का प्रसारण करता है, जिसका उद्देश्य केवल व्यावसायिक है, तो वह उसी को देखना अधिक पसंद करता है। उसी तरह सुदूर जंगलों में रहने वाले आदिवासियों तक टेलीविज़न द्वारा मिलने वाले भूमंडलीकरण, निजीकरण, उदारीकरण, स्मार्ट सिटी, मॉल की संस्कृति, जीवन के विकास, सरकार द्वारा निर्मित लाभकारी नीतियों आदि की जानकारी नहीं पहुँच पाती है। गरीबी और भुखमरी के बीच निरंतर संघर्ष करते ऐसे लोगों तक या तो टेलीविज़न नहीं पहुँच पाता या टेलीविज़न पहुँचता भी है, तो बिजली नहीं पहुँचती है और उनके लिए टेलीविज़न द्वारा मिलने वाली अनौपचारिक शिक्षा का कोई अर्थ नहीं रह जाता है।

आज व्यावसायिकता और टीआरपी के कारण पीत पत्रकारिता को जिस तरह महत्त्व मिल रहा है, उससे समाज, धर्म, संस्कृति, इतिहास आदि की सच्चाई को लेकर भी लोग भ्रमित रहते हैं, ऐसे में टेलीविज़न से मिल रही सूचनाओं ने युवाओं को ही नहीं बल्कि समाज के अन्य वर्गों को भी दिशाहीन बनाकर विवेक और अविवेक, धर्म और अधर्म, संस्कृति और अपसंस्कृति में अंतर करने के ज्ञान से भी उन्हें वंचित कर दिया है।

इससे इनकार नहीं किया जा सकता है कि टेलीविज़न अनौपचारिक शिक्षा का काफ़ी सशक्त माध्यम है। टेलीविज़न ही नहीं जितने भी नव इलेक्ट्रॉनिक माध्यम हैं जैसे कि व्हाट्स एप, फेसबुक, ट्यूटर, यू ट्यूब आदि भी अनौपचारिक शिक्षा के काफ़ी सशक्त और महत्त्वपूर्ण माध्यम हैं, लेकिन प्रश्न प्रवृत्ति और निवृत्ति का है, ज्ञान के उन्मेष का है, जानने की दिशा का है और जिज्ञासा जगाने वाली पारिस्थितिकी का है और अनौपचारिक शिक्षा के लिए भी विवेक और प्रतिबद्धता आवश्यक है।

टेलीविज़न से प्रसारित कौशल विकास और रोज़गारोन्मुख कार्यक्रम जो आजीविका के साधन विकसित करने में समर्थ हैं, निश्चित तौर पर औपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं और आगे भी होंगे। ऐतिहासिक धरोहरों के बारे में जानकारी देती डॉक्यूमेंट्री फिल्म हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत से परिचित कराती है, लेकिन इसे देखने वालों की संख्या अधिक नहीं होती है। इससे डॉयरेक्टर, प्रोड्यूसर और लेखक का उद्देश्य अधिक लोगों तक नहीं पहुँच पाता है। हाँ, 'रामायण', 'महाभारत', 'बालिका वधू' जैसे धारावाहिक यदि बनते रहें, तो इससे अधिक से अधिक लोग पौराणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम हो सकेंगे।

15.7 सारांश

देश में शिक्षा के विस्तार और विकास के बावजूद औपचारिक शिक्षा पद्धति राष्ट्रीय ज़रूरतों को पूरा करने में सक्षम नहीं साबित हुई है। इस कमी की भरपाई के लिए अनौपचारिक शिक्षा पर ज़ोर बढ़ा है। अनौपचारिक शिक्षा पद्धति एक ऐसी लचीली शिक्षा पद्धति है, जो औपचारिक शिक्षा के दायरे से बाहर के लोगों की ज़रूरतों को पूरा करती है। औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा में कुछ स्वरूपगत अंतर है। अनौपचारिक शिक्षा में अकादमिक ज्ञान की अपेक्षा व्यावहारिक शिक्षा पर ज़ोर दिया जाता है। इसमें स्व–मूल्यांकन और सामूहिक चर्चा और पहलकदमी को बढ़ावा दिया जाता है। अनौपचारिक शिक्षा के तहत प्रौढ़ शिक्षा, सतत शिक्षा, साक्षरता अभियान, दूर शिक्षा और अन्य कई शिक्षा प्रणालियाँ भी काम करती हैं। हाल के वर्षों में अनौपचारिक शिक्षा की लोकप्रियता बढ़ी है और कई औपचारिक संस्थाएँ अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय हैं।

अनौपचारिक शिक्षा के प्रसार में टेलीविज़न की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसमें टेलीविज़न एक तरह से शिक्षक और क्लास रूम दोनों की भूमिका अदा करता है। अनौपचारिक शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए टेलीविज़न एक तरह से 'वर्चुअल क्लास रूम' बन जाता है। अनौपचारिक शिक्षा के लिए टेलीविज़न लेखन करते हुए कई बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। इसमें लेखक को सृजनात्मक प्रयोग करने की काफ़ी छूट होती है, लेकिन उसे अपने विद्यार्थियों की ज़रूरतों का ध्यान भी अवश्य रखना चाहिए। लेखक को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि उसके विद्यार्थियों की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अलग–अलग है। अनौपचारिक शिक्षा के टेलीविज़न कार्यक्रमों की भाषा जहाँ तक संभव हो सरल, स्पष्ट और आम बोलचाल की भाषा होनी चाहिए। इसमें लेखक का ज़ोर विषयवस्तु को दैनिक जीवन के उदाहरणों से समझाने पर होना चाहिए।

15.8 अभ्यास के प्रश्न

1. शिक्षा का अर्थ समझाते हुए अनौपचारिक शिक्षा पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
2. औपचारिक शिक्षा से अनौपचारिक शिक्षा किस तरह भिन्न है? स्पष्ट कीजिए।
3. अनौपचारिक शिक्षा के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।
4. अनौपचारिक शिक्षा के संबंध में टेलीविज़न की भूमिका पर अपना विचार व्यक्त कीजिए।
5. अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में टेलीविज़न की सीमाओं और भूमिका का मूल्यांकन कीजिए।